प्रकाशन तिथि : 26 जुलाई 2016, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 35, अंक 1, कुल पृष्ठ 32

ISSN 2454-5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, अतिशय क्षेत्र दहिगांव, सोलापुर (महा.)

वीतराग-विज्ञान (397)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com
ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

सम्प्रदान शक्ति

आत्मा को आनन्द की आवश्यकता है। वह आनंद देने की शक्ति आत्मा में ही है; राग में आनन्द देने की शक्ति नहीं है, उसमें तो दुःख देने की शक्ति है। आइसक्रीम, गुलाबजामुन, चाय, स्त्री, सुगंध आदि में ऐसी शक्ति नहीं है कि आत्मा को आनन्द प्रदान कर सकें। मूढ जीवों ने मूर्खता से ही उनमें आनन्द माना है। जो आत्मा के आनन्द को जान ले वह अन्यत्र कहीं आनन्द नहीं मानता और जिसमें आनन्द न माने उसे लेता भी नहीं है। इसप्रकार आत्मा पात्र होकर राग या पर का लेने वाला नहीं है, किन्तु अपने स्वभाव में से दिये जाने वाले आनन्द का ही लेने वाला है। इसलिये ज्ञानस्वभाव की दृष्टि में ज्ञानी के समस्त भाव ज्ञान आनन्दमय ही होते हैं। रागादि सचमुच ज्ञानभाव नहीं हैं, वे तो ज्ञान से भिन्न ज्ञेय हैं, ज्ञानी उनका ज्ञाता है; किन्तु अपने आत्मा को उस राग का सम्प्रदान नहीं बनाता, ज्ञान-आनन्द का ही सम्प्रदान बनाता है। उसी को लेता है, उसी रूप परिणमित होता है। इसप्रकार सम्प्रदानशक्ति से आत्मा स्वयं ही सम्यग्दर्शनादि का दाता तथा स्वयं ही उनका ग्रहण करने वाला पात्र है अन्य कोई उसका सम्प्रदान नहीं है तथा वह किसी का सम्प्रदान नहीं है। आत्मा की ऐसी शक्ति को जानने से आत्मा समझ में आता है और धर्म होता है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 548

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 35 (वीर नि. संवत् - 2542) 397 अंक : 1

मत कीज्यो जी यारी...

मत कीज्यौ जी यारी, घिनगेह देह जड़ जान के।।टेक।।
मात तात रज वीरज सौं यह, उपजी मल फुलवारी।
अस्थिमाल स्नायु जाल की, लाल लाल जल क्यारी।।1।।
कर्म कुरङ्ग थली पुतली यह मुत्रपुरीष भण्डारी।
चर्ममडी रिपुकर्म घड़ी, धन-धर्म चुरावन हारी।।2।।
जे जे पावन वस्तु जगत में, ते इन सर्व बिगारी।
स्वेद मेद कफ क्लेशमयी, बहु मदगद व्याल पिटारी।।3।।
जो संयोग रोगभव तौलौं, जो वियोग शिवकारी।
बुध तासौं न ममत्व करै, यह मूढमतिन को प्यारी।।4।।
जिन पोषी ते भये सदोषी, तिन पाये दुःख भारी।
जिन तप ठान ध्यान कर शोषी, भये मोक्ष अधिकारी।।5।।
सुरधनु शरद जलद जल बुदबुद, त्यौं झट विनशनहारी।
यातैं भिन्न जान निज चेतन, 'दौल' होहु शमधारी।।6।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

शुक्लध्यान के प्रकार

शुक्ल ध्यान कुल चार प्रकार के होते हैं।

तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रिया निवर्तीनि ।।३९।।

पृथक्त्ववितर्क, एकत्ववितर्क, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति और व्युपरत क्रियानिवर्ति – ये चार भेद शुक्लध्यान के हैं।

अब शुक्लध्यान के आलम्बन की चर्चा करते हैं।

तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

त्र्यैकयोगकाययोगायोगानाम् ।।४०।।

पहला शुक्लध्यान तीनों योगों में होता है, दूसरा शुक्लध्यान तीनों योगों में से किसी एक योग में होता है, तीसरा शुक्लध्यान काययोगवालों के होता है और चौथा शुक्लध्यान अयोग केवलियों के होता है।

विशेष कथन

अब आरंभ के दो ध्यानों के संदर्भ में कुछ विशेष समझाते हैं। तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ।।४१।।

अवीचारं द्वितीयम् ।।४२।।

वितर्कः श्रुतम् ।।४३।।

वीचारोऽर्थव्यञ्जनयोग संक्रान्तिः ।।४४।।

आरंभ के दो शुक्लध्यान पूर्ण श्रुतकेवली के ही होते हैं; इसलिए दोनों का आश्रय एक ही है।

आरंभ के दोनों ही शुक्लध्यान वितर्क सहित और वीचार सहित होते हैं। पर दूसरा शुक्लध्यान वीचार से रहित होता है।

तात्पर्य यह है कि पहला शुक्लध्यान तो वितर्क और वीचार – दोनों से सहित होता है, परन्तु दूसरा शुक्लध्यान वितर्क से सहित और वीचार से रहित होता है।

श्रुतज्ञान को वितर्क कहते हैं। विशेषरूप से तर्क अर्थात् विचार करने को वितर्क कहते हैं।

अर्थसंक्रान्ति, व्यंजनसंक्रान्ति और योगसंक्रान्ति को वीचार कहते हैं। यह वीचार मात्र प्रथम शुक्लध्यान में होता है।

ध्यान करते समय द्रव्य को छोड़कर पर्याय का ध्यान करना और पर्याय को छोड़कर द्रव्य का ध्यान करना अर्थात् ध्यान के विषय को बदलना **अर्थसंक्रान्ति** है।

एक श्रुतवचन का आलंबन लेकर दूसरे श्रुत वचन का आलम्बन लेना, फिर उसे भी त्याग कर अन्य वचन का आलम्बन लेना, **व्यंजन संक्रान्ति** है।

काययोग को छोड़कर दूसरे योग को स्वीकार करना और दूसरे योग को छोड़कर काययोग को स्वीकार करना, **योगसंक्रान्ति** है।

इसप्रकार के परिवर्तन को वीचार कहते हैं।

यह वीचार पृथक्त्व वितर्क नामक प्रथम शुक्लध्यान में होता है।

असंख्यातगुणी निर्जरा

अब आगामी सूत्र में यह स्पष्ट करते हैं कि किसके कितनी निर्जरा होती है। तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्त-मोहक्षपकक्षीणमोहजिनाःक्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ।।४५।।

सम्यग्दृष्टि, पंचमगुणस्थानवर्ती श्रावक, छठवें-सातवें गुणस्थानवर्ती महाव्रती मुनिराज, अनन्तानुबंधी का विसंयोजन करनेवाले, दर्शनमोह का क्षय करनेवाले, चारित्रमोह का उपशम करनेवाले, उपशान्तमोह अर्थात् ग्यारहवें गुणस्थानवाले, क्षपकश्रेणी चढ़नेवाले, क्षीणमोह अर्थात् बारहवें गुणस्थानवाले और जिनेन्द्र भगवान के परिणामों की विशुद्धता अधिक-

अधिक होने से प्रतिसमय क्रमशः असंख्यातगुणी-असंख्यातगुणी निर्जरा होती है।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक को तो अविरत सम्यग्दृष्टि से असंख्यातगुणी निर्जरा होती है; पर सम्यग्दृष्टि को किससे असंख्यातगुणी निर्जरा समझें ?

उत्तर – सातिशय मिथ्यादृष्टि के अनिवृत्तिकरण के अन्त समय में होनेवाले अतिविशुद्ध परिणामों से आयुकर्म के बिना सात कर्मों की जो गुणश्रेणी निर्जरा होती है; उससे असंयत सम्यग्दृष्टि के असंख्यातगुणी निर्जरा होती है[१]।।४५।।

निर्ग्रन्थ मुनियों के प्रकार

निर्ग्रन्थ मुनिराजों के प्रकार और उनका स्वरूप बतानेवाला सूत्र इसप्रकार है –

पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ।।४६।।

पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक – ये पाँच प्रकार निर्ग्रन्थ मुनिराज के होते हैं।

१. जिन मुनिराजों के उत्तरगुणों की तो भावना भी न हो और मूलगुणों में भी कभी-कभी दोष लग जाते हैं; उन मुनिराजों को **पुलाक मुनिराज** कहते हैं।

२. जो बाह्य और अभ्यन्तर परिग्रह का त्याग करने को सदा तत्पर हों और मूलगुणों का निर्दोष पालन करते हों; किन्तु शरीर, पीछी वगैरह उपकरणों से मोह हो; उन मुनिराजों को **बकुश मुनिराज** कहते हैं।

३. **कुशील साधु** दो प्रकार के होते हैं –

I. प्रतिसेवना कुशील और II. कषाय कुशील।

I. जिनके मुलगुण और उत्तरगुण – दोनों ही पूर्ण हों, पर उत्तरगुणों में कभी-कभी दोष लग जाता हो; उन **मुनिराजों को प्रतिसेवना कुशील** कहते हैं।

II. जिन्होंने अन्य कषायों के उदय को तो वश में कर लिया है; पर संज्वलन कषाय के उदय को वश में न कर पाया हो; वे **कषाय कुशील मुनिराज** हैं।

४. जिनके मोहनीय कर्म का तो उदय ही नहीं है और शेष घाति कर्मों का उदय भी जल में खींची गई रेखा के समान है तथा अन्तर्मुहूर्त बाद ही केवलज्ञान होनेवाला है; वे **मुनिराज निर्ग्रन्थ** हैं।

५. जिनके घातिकर्म नष्ट हो गया है; वे **स्नातक मुनिराज** हैं।

ये पाँचों ही बाह्य-अभ्यन्तर परिग्रह के त्यागी और सम्यग्दृष्टि होते हैं; इसलिए सभी को निर्ग्रन्थ कहते हैं।।४६।।

मुनिराजों की विशेषता

उक्त मुनिराजों में निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर विशेषतायें होती हैं अर्थात् अन्तर होता है।

तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः।।४७।।

संयम, श्रुत, प्रतिसेवना, तीर्थ, लिंग, लेश्या, उपपाद और स्थान के भेद से पुलाक आदि मुनिराजों में भेद होता है।

१. संयम – पुलाक, बकुश और प्रतिसेवना-कुशील मुनि के **सामायिक और छेदोपस्थापना संयम होता है।**

कषाय कुशील मुनि के **सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि और सूक्ष्म साम्पराय संयम होता है।**

निर्ग्रन्थ और स्नातक के **एक यथाख्यात संयम ही होता है।**

२. श्रुत – पुलाक, बकुश और प्रतिसेवना कुशील मुनि **अधिक से अधिक पूरे दस पूर्व के ज्ञाता होते हैं।**

कषाय-कुशील और निर्ग्रन्थ मुनिराज **चौदह पूर्वों के ज्ञाता होते हैं।**

पुलाक मुनि कम से कम **आचारांग के ज्ञाता होते हैं।**

बकुश, कुशील और निर्ग्रन्थ **पाँच समिति और तीन गुप्तियों के ज्ञाता होते हैं।**

स्नातक तो **केवलज्ञानी होते हैं,** उनके श्रुताभ्यास का प्रश्न ही नहीं है।

३. प्रतिसेवना – प्रतिसेवना का मतलब व्रतों में दोष लगाना है। पुलाक मुनि पाँच महाव्रतों में तथा रात्रि में भोजन त्याग व्रत में से किसी एक में परवश होकर कभी कदाचित् दोष लगा लेते हैं।

[१] पण्डित सदासुखदासजी : अर्थप्रकाशिका, अध्याय ९, सूत्र ४५

बकुश मुनि के दो भेद हैं – उपकरण-बकुश और शरीर-बकुश। उपकरण बकुश मुनि को सुन्दर उपकरणों में आसक्ति रहने से विराधना होती है और शरीर-बकुश मुनि की अपने शरीर में आसक्ति होने से विराधना होती है।

प्रतिसेवना-कुशील मुनि उत्तर गुणों में कभी कदाचित् दोष लगा लेते हैं।

कषाय-कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक के प्रतिसेवना नहीं होती; क्योंकि त्यागी हुई वस्तु का सेवन करने से प्रतिसेवना होती है; सो ये करते नहीं हैं।

४. **तीर्थ –** तीर्थ यानी सभी तीर्थंकरों के तीर्थ में पाँचों प्रकार के निर्ग्रन्थ पाये जाते हैं।

५. **लिंग –** लिंग के दो भेद हैं – द्रव्यलिंग और भावलिंग। भावलिंग की अपेक्षा तो पाँचों ही निर्ग्रन्थ भावलिंगी हैं; क्योंकि सभी सम्यग्दृष्टि और संयमी होते हैं। **द्रव्यलिंग की अपेक्षा सभी निर्ग्रन्थ दिगम्बर होते हुए भी स्नातक के पीछी कमण्डलु उपकरण नहीं होते, शेष के होते हैं।** अत: द्रव्यलिंग में थोड़ा अन्तर पड़ जाता है।

६. **लेश्या –** पुलाक के **तीन शुभ लेश्याएँ** ही होती हैं। बकुश और प्रतिसेवना कुशील के **छह लेश्याएँ** होती हैं; क्योंकि उपकरणों में आसक्ति होने से कभी अशुभ लेश्याएँ भी हो सकती हैं। कषाय कुशील के कृष्ण और नील के सिवा बाकी की **चार लेश्याएँ** होती है। निर्ग्रन्थ और स्नातक के **एक शुक्ल लेश्या** ही होती है। अयोग केवली के **लेश्या नहीं होती।**

७. **उपपाद –** पुलाक मुनि अधिक से अधिक **सहस्रार स्वर्ग** में उत्कृष्ट स्थिति के धारक देव होते हैं। बकुश और प्रतिसेवना कुशील बाईस सागर की स्थितिवाले **आरण और अच्युत स्वर्ग में** उत्पन्न होते हैं। कषाय कुशील और ग्यारहवें गुणस्थानवाले निर्ग्रन्थ तैंतीस सागर की स्थितिवाले **सर्वार्थसिद्धि विमान में** उत्पन्न होते हैं।

इन सबकी उत्पत्ति कम से कम सौधर्म कल्प में होती है और स्नातक तो मोक्ष जाता है।

८. **स्थान –** इसीतरह संयम के स्थानों की अपेक्षा भी इनमें अन्तर होता है।।४७।।

इसप्रकार यहाँ नौवाँ अध्याय समाप्त होता है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

निजात्म-ध्यान की प्रेरणा

पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौं मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई।।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

सम्यग्दृष्टि श्रावक ऐसा विचारता है कि यदि मेरी श्रद्धा-ज्ञान-शान्तिरूप आत्मसम्पदा मेरे पास है, तो मुझे बाहर की सम्पदा से क्या काम ? और जहाँ ऐसी आत्मसम्पदा न हो वहाँ बाह्य सम्पदा के ढेर भी लगे हों तो भी उनसे क्या लाभ ? रत्नकरण्ड श्रावकाचार में भी कहा है –

यदि पापनिरोधोन्य सम्पदा किं प्रयोजनम्।
अथ पापास्रवोस्त्यन्य सम्पदा किं प्रयोजनम्।।२७।।

यदि मेरे सम्यक्त्वादि से आस्रव का निरोध है तो उसके फल में केवलज्ञानादि अनन्त चैतन्य सम्पदा मुझे सहज में मिलेगी, फिर मुझे बाह्य सम्पदा का क्या काम है ? और बाह्य सम्पदा के लिए यदि पापकर्म का आस्रव होता हो तो ऐसी बाह्य सम्पदा का भी मुझे क्या करना है ? मैं भगवान-आत्मा स्वयं असीम चैतन्य सम्पदा का भण्डार हूँ, आत्मा की सम्यक्-श्रद्धा-ज्ञानादि अचिन्त्य रत्नों का पिटारा मेरे पास है, तो फिर बाहर की जड़-लक्ष्मी से मुझे क्या प्रयोजन ? सम्यक्त्वादि के प्रयोजन के प्रताप से मेरे अन्दर में सुख-शान्तिरूप समृद्धि वर्तती ही है फिर मुझे अन्य किसी से क्या काम ? और जिसको अन्तर में शान्ति नहीं है, सम्यग्दर्शन-ज्ञानादि रत्नों की सम्पदा जिसके अन्तर में नहीं है, तो बाहर की सम्पदा के ढेर से

उसे तो क्या लाभ होगा ? सच्ची सम्पदा तो वह है कि जिससे आत्मा को शान्ति मिले अर्थात् आत्मा की सच्ची श्रद्धा-ज्ञान वीतरागता ही वास्तव में सम्पदा है। ऐसी सम्पदा वाला सुखिया धर्मात्मा बाहर की अनुकूलता-प्रतिकूलता दोनों को अपने से भिन्न जानता है अर्थात् उनमें हर्ष-शोक नहीं करता, ज्ञान जुदा ही रहता है। ऐसा सम्यग्दर्शन-ज्ञान अन्तर में प्रकट करना ही सबका सार है।

मूढ लोग बाह्य लक्ष्मी को ही सर्वस्व मानते हैं, वे लक्ष्मी के लिए जीवन खपा देते हैं और अनेकप्रकार के पाप बांधते हैं, उन्हें सुख कभी नहीं मिलता। बापू ! ज्ञानादि अनन्त चैतन्यरूप तेरी सच्ची लक्ष्मी तेरी आत्मा में ही भरी है, उसे देख! तेरी चैतन्य सम्पदा में बाहर की अनुकूलता या प्रतिकूलता कैसी ? ऐसी चैतन्य सम्पदा के भान बिना सच्ची शान्ति या श्रावकपना नहीं होता। सम्यग्दर्शन के प्रताप से त्रिलोक में श्रेष्ठ सम्पदारूप सिद्ध पद प्राप्त होता है, फिर दूसरी किसी भी सम्पदा का क्या प्रयोजन है ? बाह्य सम्पदा तो वास्तव में सम्पदा ही नहीं है।

अरे जीव ! पाप के फल में तू दु:खी मत हो, हताश मत हो। संयोग के समय ही उस संयोग से तेरा ज्ञान तो भिन्न ही है, उसे पहिचान। पाप का उदय आने पर चारों ओर से प्रतिकूलतायें आ पड़े, स्त्री-पुत्रादि मर जावें, असाध्य रोग से पीड़ा हो जावे, धन नाश हो जावे, गृहदहन हो जावे, महा अपयश हो जावे, अरे ! नरक का संयोग भी मिले, श्रेणिक आदि असंख्य सम्यग्दृष्टि जीव नरक में हैं, इसप्रकार एक साथ ही हजारों प्रतिकूलतायें आवें तथापि सम्यग्दृष्टि अपने ज्ञानस्वरूप की श्रद्धा को नहीं छोड़ता है। भाई ! इन संयोगों में आत्मा कहाँ है ? आत्मा तो इनसे भिन्न है और आत्मा का आनन्द उसी में है, अत: आत्मा का आश्रय कर, इससे तुझे चैतन्य की अपूर्व शान्ति का वेदन होता रहेगा।

जिसप्रकार प्रतिकूलता से भिन्नपना कहा, उसीप्रकार पुण्य के फल में चतुर्दिक अनुकूलता हो-स्त्री-पुत्रादि अच्छे हों, निरोग शरीर हो, धन हो, बंगला-मोटर आदि हों, यश चारों तरफ फैल रहा हो, अरे ! देवलोक में उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्धि की ऋद्धि हो, तथापि उन सबसे क्या लाभ ? उन संयोगों में आत्मा है क्या ? आत्मा तो उनसे भिन्न ही है, आत्मा का आनन्द आत्मा में है – ऐसा धर्मी जानता है और

उसके ज्ञान में उसका ही वेदन वर्तता है। पुण्य-पाप के कारण वह अपने को सुखी-दुखी नहीं मानता। जैसे किन्हीं अरहंतों को तीर्थंकर प्रकृति के उदय से समवशरणादि का अद्भुत संयोग होता है; परन्तु उन संयोग के कारण अरहन्त भगवान सुखी नहीं हैं, उनका सुख तो आत्मा के केवलज्ञानादि परिणमन से ही है, अर्थात् वे स्वयंभू हैं, उनमें किसी दूसरे की अपेक्षा नहीं है, उसीप्रकार निचली दशा में भी सर्वत्र ऐसा ही समझना। सम्यग्दृष्टि अपने शुद्ध चैतन्य परिणमन से ही सुखी है, पुण्य से अथवा बाह्य संयोग से नहीं।

भाई ! संसार में पुण्य-पाप के फल तो चलती-फिरती छाया जैसे हैं। कोई आज बड़ा जौहरी हो और कल भिखारी हो जाय, पैसा-पैसा मांगता फिरे अथवा आज तो भिखारी हो और कल ही बड़ा राजा बन जाय, क्या यह ज्ञान का काम है ? यह तो जड़ पुद्गल की क्रिया है। आत्मा तो ज्ञानस्वरूप है, उसमें न तो पुण्य है और न पाप है, पुण्य-पाप के कारणरूप राग भी आत्म के ज्ञानस्वभाव में नहीं है। ऐसे अपने स्वरूप को करोड़ों उपायों से भी पहिचानना योग्य है तथा जगत के झंझट छोड़कर अन्तर में उसी आत्मा का ध्यान करना उचित है – यही लाखों बातों का सार है। इसके बिना दूसरी लाखों बातें भले करे; परन्तु मात्र बातों से बड़ा नहीं बन सकता – आत्मा के कल्याणपथ पर नहीं जा सकता। ज्ञानस्वरूप आत्मा का निर्णय करके सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान प्रकट करने पर जन्म-मरण का फन्दा छूट जाता है, इसलिए वही वास्तव में सार है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान के बिना दूसरी लाखों बातें सब असार हैं, उनमें सार नहीं और आत्मा का किंचित् भी हित नहीं है।

शुभ-अशुभ भावकर्म हैं, पुण्य-पाप कर्म द्रव्यकर्म हैं और उनके फलस्वरूप अनुकूल-प्रतिकूल सामग्री नोकर्म हैं – इन तीनों में आत्मा की शान्ति नहीं है, अत: उनकी रुचि छोड़। उन सबसे भिन्न अपना ज्ञानस्वरूप आत्मा महा आनन्द और शान्ति का धाम है। यदि तू अनन्तकाल से अप्राप्त अपूर्व आत्मशान्ति चाहता है, अपना महान चैतन्य-निधान देखना चाहता है, तो पुण्य-पाप, राग-द्वेष और बाह्य सामग्री से भिन्न अपने चैतन्य की ओर उल्लासपूर्वक सन्मुख होकर उसकी श्रद्धा-ज्ञान कर और उसी का ध्यान कर। यही सर्व शास्त्रों का सार है और संसार के अभाव का उपाय है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

सिद्ध भगवान का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 72वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णट्ठट्ठकम्मबंधा अट्ठमहागुणसमण्णिया परमा।
लोयग्गठिदा णिच्चा सिद्धा ते एरिसा होंति।।७२।।

(हरिगीत)

नष्ट कीने अष्ट विध विधि स्वयं में एकाग्र हो।
अष्ट गुण से सहित सिध थित हुए हैं लोकाग्र में।।७२।।

अष्टकर्मों के बंध को नष्ट करने वाले, आठ महागुणों से संपन्न, परम, लोकाग्र में स्थित और नित्य – ऐसे सिद्धपरमेष्ठी होते हैं।

(गतांक से आगे....)

(मालिनी)

व्यवहरणनयेन ज्ञानपुंज: स सिद्ध:
त्रिभुवनशिखराग्रग्रावचूडामणि: स्यात्।
सहजपरमचिच्चिन्तामणौ नित्यशुद्धे
निवसति निजरूपे निश्चयेनैव देव:।।१०१।।

(दोहा)

निश्चय से निज में रहें नित्य सिद्ध भगवान।
तीन लोक चूडामणी यह व्यवहार बखान।।१०१।।

व्यवहारनय से ज्ञानपुंज ऐसे वे सिद्धभगवान त्रिभुवनशिखर की शिखा के **(चैतन्यघनरूप)** ठोस चूड़ामणि हैं; निश्चय से वे देव सहजपरम चैतन्यचिन्तामणि स्वरूप नित्यशुद्ध निज रूप में ही वास करते हैं।

कैसे हैं सिद्धभगवान ? व्यवहारनय से ज्ञानपुंज ऐसे वे सिद्धभगवान त्रिभुवन शिखर की शिखा के ठोस चूड़ामणि हैं। सिद्धभगवान लोक के अग्र में विराजमान हैं – यह व्यवहार का कथन है। वास्तव में तो वे अपने आत्मा में ही हैं। ज्ञानपुञ्ज परमात्मा चैतन्यकमल परिपूर्ण खिल गया है, केवलज्ञान-दर्शन-सुख आदि प्रकट हुए हैं। वे भगवान व्यवहार से त्रिभुवन शिखर की शिखा के ठोस चूड़ामणि हैं। सिद्धभगवान सादि-अनन्तकाल लोकाग्र में विराजते हैं।

निश्चय से वे सिद्धभगवान सहजपरमचैतन्य चिन्तामणिस्वरूप नित्यशुद्ध निजरूप में ही बसते हैं – अपने सहज ज्ञानानन्द चैतन्यचिन्तामणि स्वरूप में ही विराजमान हैं, यह निश्चय का कथन है। अपने आत्मा का स्वभाव भी उन जैसा ही है। इस आत्मा की पर्याय में जो कुछ कमी है वह व्यवहारनय का विषय है। ऐसे सिद्धभगवान को जानकर अपने ज्ञानानन्द स्वभाव से परिपूर्ण आत्मा को यथार्थ जानना – जैसा आत्मा का सच्चा स्वरूप है वैसा श्रद्धान करना – वह निश्चय सम्यग्दर्शन है।

दूसरा छन्द इसप्रकार है –

(स्रग्धरा)

नीत्वास्तान् सर्वदोषान् त्रिभुवनशिखरे ये स्थिता देहमुक्ता:
तान् सर्वान् सिद्धिसिद्ध्यै निरुपमविशदज्ञानदृक्शक्तियुक्तान्।
सिद्धान् नष्टानष्टकर्मप्रकृतिसमुदयान् नित्यशुद्धाननन्तान्
अव्याबाधान्नमामि त्रिभुवनतिलकान् सिद्धिसीमन्तिनीशान्।।१०२।।

(वीर)

देहमुक्त लोकाग्र शिखर पर रहे नित्य अन्तर्यामी।
अष्ट कर्म तो नष्ट किये पर मुक्ति सुन्दरी के स्वामी।।
सर्व दोष से मुक्त हुए पर सर्वसिद्धि के हैं दातार।
सर्वसिद्धि की प्राप्ति हेतु मैं करूँ वन्दना बारंबार।।१०२।।

जो सर्व दोषों को नष्ट करके देवमुक्त होकर त्रिभुवनशिखर पर स्थित हैं, जो निरुपम विशद **(–निर्मल)** ज्ञानदर्शनशक्ति से युक्त हैं, जिन्होंने आठ कर्मों की प्रकृति के समुदाय को नष्ट किया है, जो नित्यशुद्ध हैं, जो अनन्त हैं, अव्याबाध हैं, तीन लोक में प्रधान हैं और मुक्तिसुन्दरी के स्वामी हैं, उन सर्व सिद्धों को सिद्धि की प्राप्ति के हेतु मैं नमन करता हूँ।

यह सिद्धभगवान की व्याख्या है। शरीर, कर्म और पुण्य-पापरूप विकार रहित जो परमात्मा हुए उनका कैसा स्वरूप है – यह चर्चा यहाँ चल रही है। सिद्धभगवान को अपना ज्ञान-दर्शनादि स्वभाव परिपूर्ण प्रकट हो गया है, परिपूर्ण परमानन्द प्राप्त हो गया है, देह-मन-वाणी तथा ज्ञानावरणादि अष्टकर्म छूट गए हैं और अज्ञान, राग, योग का कम्पन इत्यादि विकार का सर्वथा अभाव हो गया है। इस आत्मा का भी सिद्धभगवान जैसा ही स्वरूप है। एकसमय की पर्याय का लक्ष छोड़कर देखें तो यह आत्मा भी सिद्धभगवान जैसा ही शुद्ध है – परमानन्द स्वरूप है।

सिद्धभगवान सब दोषों को नष्ट करके देहमुक्त होकर त्रिभुवन शिखर पर स्थित हैं। उनकी आत्मा की पूर्वपर्याय में अज्ञान आदि दोष थे, उन्हें आत्मा का भान करके स्वरूप में स्थिरता द्वारा टालकर परिपूर्ण निर्मल दशा प्रकट की – सिद्धदशा प्रकट की। इस तरह सर्व दोषों का नाश करके सिद्ध हुआ जाता है। कोई एक अनादि शुद्ध परमात्मा है, अथवा कोई एक ईश्वर जगत का कर्त्ता है वह परमात्मा है – ऐसा नहीं है, क्योंकि दोषों को नाश करके परमात्मा हुआ जाता है; इसलिए अनादि शुद्ध परमात्मा नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त जगत में जो कोई पदार्थ है, उसका कर्त्ता भी कोई है नहीं; कारण कि जो पदार्थ स्वयमेव है उसको कोई उत्पन्न करता नहीं और जो पदार्थ जगत में है नहीं उसको भी कोई उत्पन्न करता नहीं; इसलिए जगत का कर्त्ता ऐसा ईश्वर कोई है नहीं। सच्चा ईश्वर परमात्मा सिद्धभगवान हैं।

सिद्धभगवान ने आत्मा की अन्तरलीनता द्वारा समस्त दोष नष्ट कर दिए हैं और देहमुक्त हो गए हैं। सिद्धभगवान त्रिभुवन शिखर पर स्थित हैं – यह कथन व्यवहारनय से है; क्योंकि वहाँ भी वे अपने स्वरूप में ही रहते हैं। सिद्धभगवान निरुपम, विशद् (-निर्मल) ज्ञान-दर्शनशक्ति से युक्त हैं, उनके ऐसा निर्मल केवलज्ञान-दर्शन प्रकट हुआ है, जिसकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती। अशरीरी सिद्धभगवान ने अष्टकर्म की प्रकृति के समुदाय को नष्ट किया है; उनकी पूर्वपर्याय में दोष था इसलिए निमित्तरूप कर्म भी था। त्रिकाली आत्मस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान और रमणता से दोषों के नाश होने पर कर्म का भी नाश हो गया है। जैसे घातिया कर्मों का नाश किया है वैसे ही अघातिया का भी नाश किया है, वे अपने आप ही टल गए हों – ऐसा नहीं है। यह निमित्त का कथन है। **(क्रमशः)**

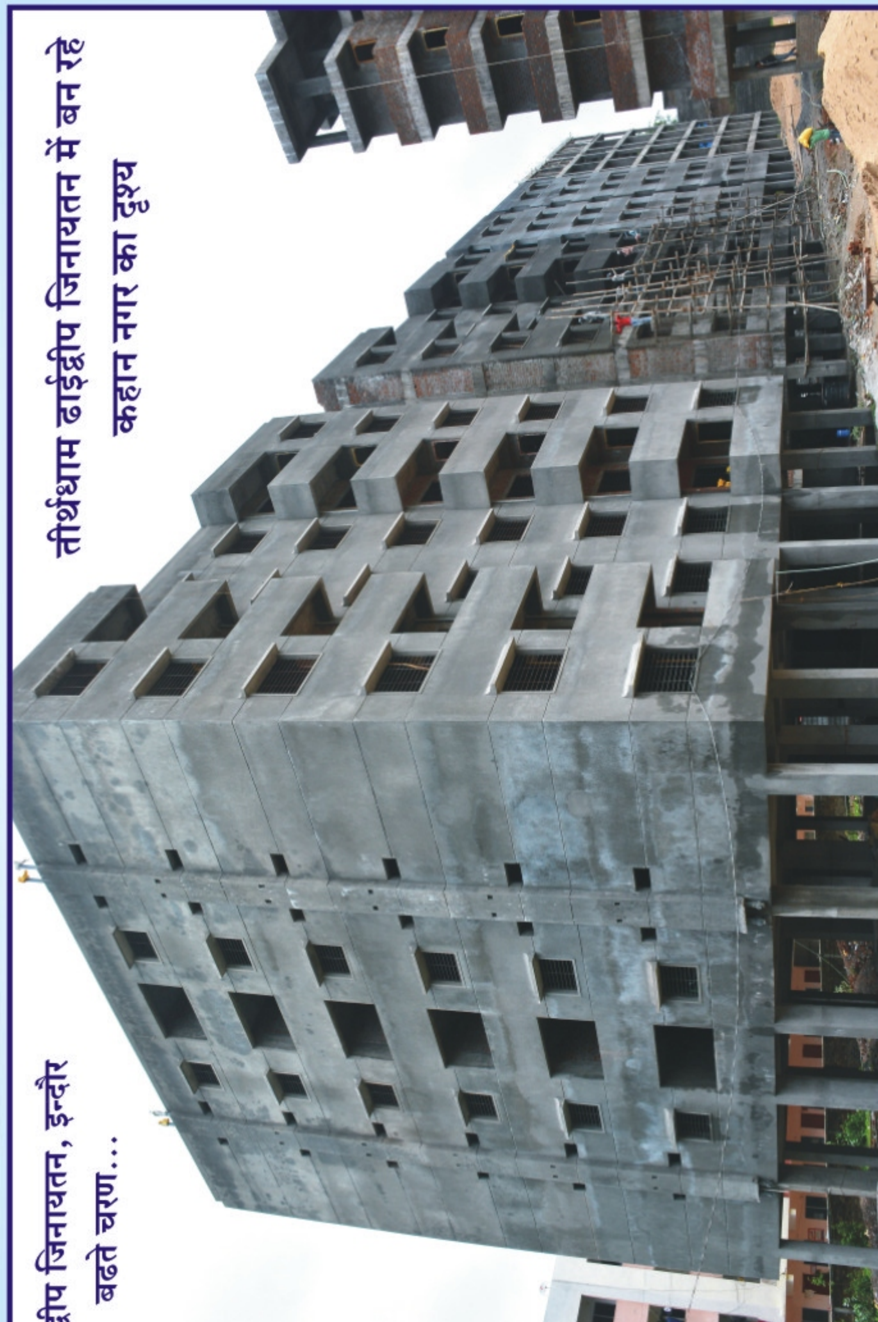

स्वर्ण जयंती के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सम्मान करते हुये JAANA के अध्यक्ष श्री अतुलभाई खारा, डलास

फ्रैंकलिन, न्यूजर्सी में समयसार महामंडल विधान करते हुये साधर्मीजन

न्यूजर्सी (अमेरिका) में अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ JAANA शिविर 2016

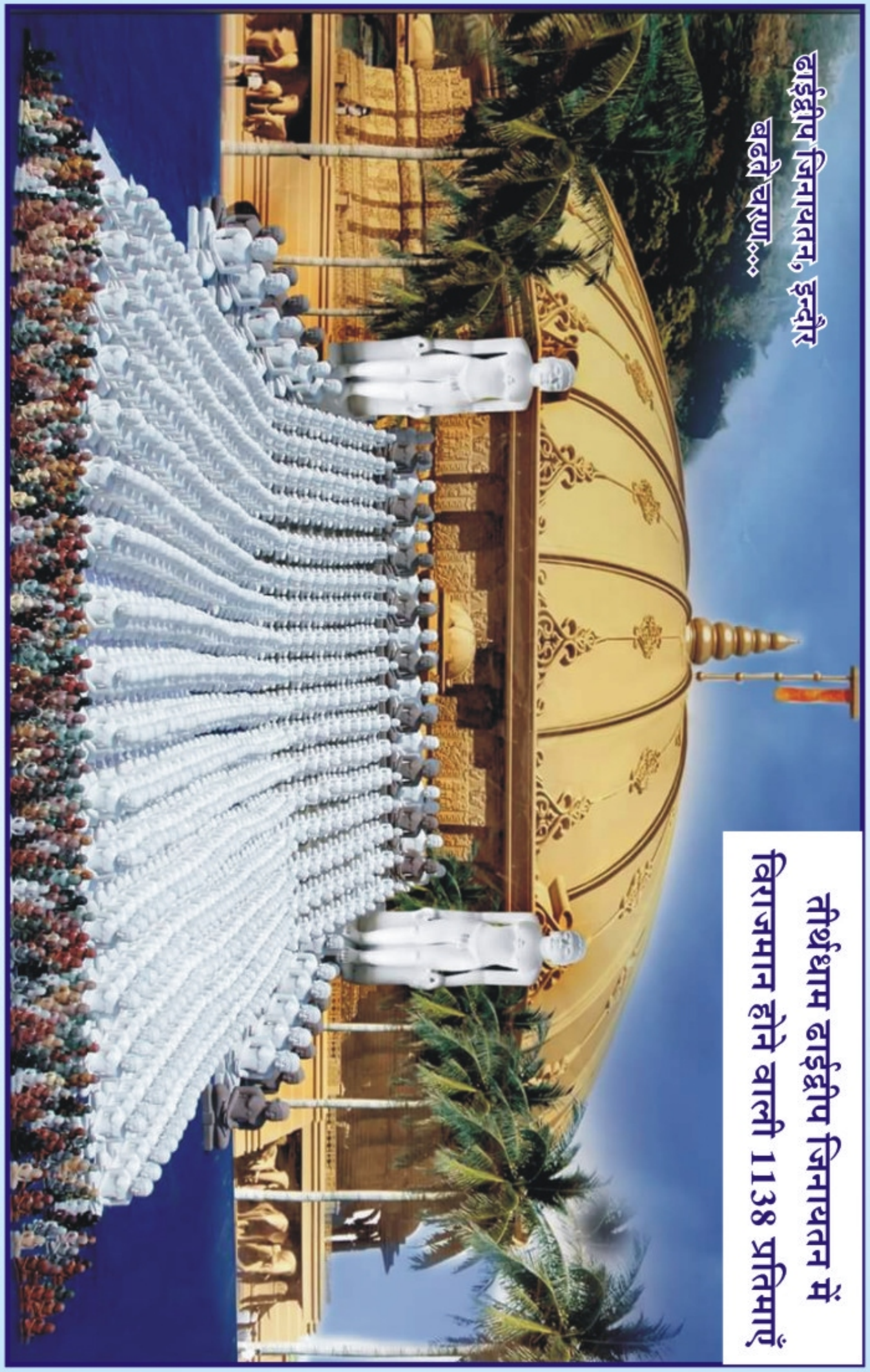

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्नः शुद्धनय के पक्ष का अर्थ क्या है ?

उत्तर : शुद्धनय का पक्ष अर्थात् शुद्धात्मा की रुचि हो जाना। यद्यपि अभी अनुभव नहीं हुआ है; तथापि रुचि ऐसी हुई है कि वह अनुभव करे ही करे। किसी जीव को रुचि तो न हो; परन्तु वह मान ले कि मुझे रुचि हो गई है तो उसके अनुभव का कोई नियम नहीं है। केवलीभगवान सम्यक्त्व सन्मुख जीव को वास्तव में जानते हैं कि इस जीव की रुचि ऐसी है कि वह अनुभव करेगा ही। ऐसी रुचिवाले जीव को वीर्य में ज्ञायक का जोर उछाल मारता है।

प्रश्नः क्रियानय और ज्ञाननय की मैत्री का क्या अर्थ है ?

उत्तर : पण्डित जयचंदजी ने ऐसा कहा है कि साधक जीव के शुद्धता और अशुद्धता दोनों ही एकसाथ रहती हैं – इसका नाम मैत्री है; जबकि पण्डित राजमलजी की कलशटीका में ऐसा कहा है कि अशुद्धता की निवृत्ति वह मैत्री है, अशुद्धि रहे वह मैत्री नहीं है अर्थात् शुद्धता हुई, वह द्रव्य के साथ मैत्री है।

प्रश्न : समयसार और नियमसार आदि में ऐसा कहा है कि भगवान शुद्धात्मा में कोई औदयिकभाव हैं ही नहीं; जबकि तत्त्वार्थसूत्र में उसे (औदयिकभाव को) आत्मा का स्वतत्त्व कहा है – इन दोनों की अपेक्षा समझाइये ?

उत्तर : समयसारादि में द्रव्यदृष्टि का वर्णन है। दृष्टि के विषय में पर्याय गौण हो जाती है। तत्त्वार्थसूत्र में प्रमाण के विषय का वर्णन है। औदयिकभावरूप से भी आत्मा स्वयं परिणमता है। आत्मा की ही वह पर्याय है, इसलिये उसे स्वतत्त्व कहा है। वह औदयिकभाव आत्मा के स्वकाल से अस्तिरूप हैं और कर्म से नास्तिरूप हैं अर्थात् कर्मोदय के कारण वह उदयभाव हुआ – ऐसा वास्तव में नहीं है। पर से तो आत्मा का नास्तित्व है अर्थात् आत्मा और पर के बीच नास्तित्वरूपी महान दुर्ग खड़ा है, इसलिये परद्रव्य आत्मा का कुछ कर सके – ऐसा नहीं बन सकता।

प्रश्न : पुरुष प्रमाण है कि वचन प्रमाण है ?

समाचार दर्शन -

स्वर्ण जयंती के अवसर पर –

अमेरिका में हुई अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

इस वर्ष टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती के अवसर पर अमेरिका के अनेक नगरों में जून एवं जुलाई माह में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

1. डलास (टेक्सास) – यहाँ जैन सोसायटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास के तत्त्वावधान में दिनांक 6 से 16 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा योगसार, श्रेणी के गुणस्थान एवं तत्त्वार्थसूत्र विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा नियमसार एवं समयसार के निर्जरा अधिकार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। शनिवार व रविवार को दो दिवसीय शिविर के आयोजन में दोनों विद्वानों द्वारा लगभग 8 घंटे ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई। जिसमें प्रवचनों के अतिरिक्त शंका-समाधान एवं नित्यनियम पूजन का कार्यक्रम रखा गया। एक दिन विशेष रूप से टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया।

दिनांक 7 से 13 जुलाई तक **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा ग्रन्थाधिराज **समयसार की 6 एवं 7वीं** गाथा के आधार से घरों पर प्रतिदिन तत्त्वचर्चा हुई।

2. शिकागो – यहाँ जैन सोसायटी ऑफ मेट्रोपोलिटन शिकागो द्वारा दिनांक 14 से 30 जून तक प्रतिदिन प्रात: अनादि अनंत त्रिकाली ध्रुव कारणपरमात्मा के स्वरूप को समझाते हुये भेदविज्ञान, सम्यग्दर्शन, आत्मानुभूति पर अत्यंत मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा ली गई।

दिनांक 22 से 30 जून तक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समयसार का सार पर सारगर्भित व मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 5 से 12 जुलाई तक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: युगलजी कृत सिद्धपूजन पर एवं रात्रि में समयसार कलश 144 पर प्रवचन का लाभ मिला। शनिवार व रविवार को शिविर के अन्तर्गत प्रवचनों के साथ-साथ सामूहिक पूजन का भी आयोजन हुआ।

3. क्लीवलैण्ड – यहाँ दिनांक 17 से 22 जून तक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई। जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धांत अकर्त्तावाद, कर्म सिद्धांत, प्रयोजनभूत तत्त्व, गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व आदि विषयों पर सरल भाषा में प्रवचनों का लाभ मिला। 2 घंटे के प्रत्येक प्रवचन के बाद शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया। प्रवचन का सार जैन सोसायटी के अध्यक्ष कल्पेश शाह ने व्यक्त किया। शनिवार व रविवार को शिविर का आयोजन हुआ। एक दिन टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया।

4. मयामी (फ्लोरिडा) – यहाँ जैन सोसायटी ऑफ साउथ फ्लोरिडा द्वारा 20 से 26

जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रात: समयसार के संवर अधिकार पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र पर सारगर्भित प्रवचन हुये। शनिवार और रविवार को विशेष रूप से सामूहिक जिनेन्द्र पूजन एवं जिनागम के महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर दो-दो घंटे के प्रवचनों का लाभ मिला। **– महेन्द्रभाई शाह**

5. वाशिंगटन डी सी – यहाँ मैरीलैण्ड स्थित जैन मंदिर में दिनांक 27 जून से 30 जून तक चार दिवसीय प्रवचनों में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ के आधार से क्रिया परिणाम अभिप्राय विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आयोजन में श्रीमती रंजनबेन-तलकभाई एवं शचि-चिराग कपाड़िया का सक्रिय सहयोग रहा।

6. न्यूयॉर्क – यहाँ दिनांक 15 से 22 जून तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

7. न्यूजर्सी – यहाँ फ्रैकलिन स्थित जैन मंदिर में श्री टोडरमल स्मारक के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर दिनांक 1 से 5 जुलाई तक जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(JAANA)** द्वारा 16वें वार्षिक शिविर का आयोजन बहुत धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात: 8 बजे से रात्रि 9 बजे तक तत्त्वज्ञान की गंगा प्रवाहित की गई।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 2 घंटे डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित समयसार महामंडल विधान का प्रथम बार आयोजन हुआ। शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनसार की गाथा 104-105 पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक (सात तत्त्व संबंधी भूल) पर तथा पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के पुरुषार्थसिद्धिउपाय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। शिविर के मध्य पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती का वृहद् स्तर पर आयोजन किया गया, लगभग डेढ घंटे चले इस आयोजन में प्रोजेक्टर के माध्यम से वीडियो पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, श्री पवनजी जैन अलीगढ के विचारों का प्रसारण किया गया। साथ ही टोडरमल स्मारक एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के संदर्भ में संजीवजी गोधा एवं विपिनजी के उद्बोधन का लाभ मिला।

इसी प्रसंग पर जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का 35 वर्षों से अमेरिका** में किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार के लिये **शॉल एवं प्रशस्ति पत्र** प्रदानकर श्री अतुलभाई खारा सहित अन्य सदस्यों द्वारा सम्मान किया गया।

समस्त आयोजन **(JAANA)** के अध्यक्ष श्री अतुलभाई खारा के कुशल निर्देशन में डलास के युवा साथियों की टीम के साथ श्रीमती चारुबेन खारा, श्री हिमान्शुभाई न्यूजर्सी परिवार, श्रीमती नीरजा, श्री राजेन्द्रजी, श्री पंकजभाई परिवार न्यूजर्सी के साथ-साथ न्यूजर्सी के और अनेक सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का सहयोग मिला। शिविर में बाल कक्षायें नियतिबेन, श्रीमती संस्कृति, श्रीमती अणिमा एवं कु. आराधना भारिल्ल द्वारा ली गई।

संपूर्ण आयोजन में अमेरिका के विविध प्रांतों से पधारे हुये लगभग 350 आत्मार्थी मुमुक्षु बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया।

जैनत्व जागरण शिविर संपन्न

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में छत्तीसगढ व मध्यप्रदेश के विभिन्न 15 स्थानों पर तृतीय जैनत्व जागरण संस्कार शिविर एवं रायपुर में तृतीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 3 से 9 जून तक किया गया।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंकदेव शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं आचार्य धरसेन मुमुक्षु आश्रम कोटा के विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। शिविर में विभिन्न स्थानों पर लगभग 1200 साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। यह शिविर रायपुर के अतिरिक्त रायपुर (शंकरनगर), तिल्दा,कुनकुरी, अंबिकापुर, शहडोल, सांकरा, बगीचा, नैला, वनखेड़ी, बलौदाबाजार, जैतहरी, रायगढ, मनेन्द्रगढ, खैरागढ आदि स्थानों पर उत्साहपूर्वक लगाया गया।

बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संदीपजी शास्त्री शहपुरा एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा द्वारा बच्चों को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान कराया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। शिविर के अन्तिम दिन 35 सदस्यों के साथ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का गठन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से श्री प्रकाशचंदजी जैन पंडरी को अध्यक्ष, श्री अशोकजी जैन घुवारा को सचिव, श्री नितिनजी शास्त्री खड़ैरी को प्रांतीय सचिव का पदभार दिया गया।

शिविर का संयोजन पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा ने एवं निर्देशन श्री अशोकजी जैन घुवारा ने किया।

हार्दिक बधाई

(1) पिड़ावा (राज.) निवासी कु. श्रुति जैन सुपुत्री श्री ऋषभजी जैन ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं की मेरिट लिस्ट में 15वाँ स्थान (झालावाड़ जिले की मेरिट में प्रथम स्थान) प्राप्त कर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल पिड़ावा का नाम रोशन किया है। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शाह शास्त्री बांसवाड़ा की सुपुत्री **नेहा जैन** ने वर्ष 2016 की आचार्य (व्याकरण शास्त्र) परीक्षा में सर्वाधिक 83% अंक प्राप्त कर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महा. एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

निजात्म कल्याण शिविर संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ दीवान ब्रदर्स द्वारा दिनांक 18 से 26 जून तक निजात्म कल्याण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय कक्षायें ली गई, जिसमें अनेकान्त-स्याद्वाद, निश्चय-व्यवहार, पाप-पुण्य, षट् लेश्या एवं कर्मों के उत्कर्षण-अपकर्षण व उदीरणा आदि विषयों को अत्यंत सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। अन्तिम दो दिन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया एवं विदुषी स्वानुभूति जैन द्वारा पांच लब्धियों पर व्याख्यान का लाभ मिला। अन्तिम दिन श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय दिया और इसकी स्वर्ण जयंती के अवसर पर सम्मेदशिखरजी में आयोजित श्री समयसार मंडल विधान में पधारने का आमंत्रण दिया।

शिविर में लगभग 700 साधर्मीजन पधारे, जिनमें से अधिकांश साधर्मियों ने पहली बार तत्त्वज्ञान का लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि सूरत में बहुत समय पश्चात् इसप्रकार का आयोजन किया गया, जिसकी सभी ने भरपूर प्रशंसा की।

विशिष्ट ज्ञानगोष्ठी संपन्न

मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री दिगम्बर जैन आदिनाथ जिनालय में दिनांक 1 मई से 15 जून तक ज्ञानगोष्ठी का विशिष्ट आयोजन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 1 से 15 मई तक पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा गुणस्थान विषय पर विशिष्ट कक्षाओं का लाभ मिला। दिनांक 1 मई से 15 जून तक ब्र. केशरीचंद्रजी धवल द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

– अक्षय जैन

फैडरेशन की शाखाओं से...

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सोमवार, दिनांक 10 अक्टूबर को तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में संपन्न होने जा रहा है।

फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि वे दिनांक 15 सितम्बर तक अपनी शाखा की गतिविधियों की रिपोर्ट बनाकर केन्द्रीय कार्यालय जयपुर भिजवा देवें। आपसे प्राप्त जानकारी का उपयोग अधिवेशन के अवसर पर तो किया ही जायेगा, साथ ही शाखाओं व पदाधिकारियों के नामोल्लेख के साथ जैनपथप्रदर्शक में भी प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जायेगा।

यदि कोई विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किया गया हो तो उसके फोटो भी भिजवाने का प्रयत्न करें।

– महामंत्री

बाल एवं वनिता बोधिनी शिविर संपन्न

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 15 जून तक कल्पद्रुम मण्डल विधान और बाल एवं वनिता बोधिनी शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन जयमाला का अर्थ पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन द्वारा किया गया। रात्रि में समयसार की तीसरी गाथा पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रवचन हुये। बाल शिविर का संचालन पण्डित अशोकजी जैन मांडलेकर राघौगढ एवं वनिता बोधिनी शिविर की तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा का संचालन ब्र. समता बहन ने किया। इसके अतिरिक्त श्रीमती सुमन जैन, रूपल शाह व रुचि जैन ने कक्षा संचालन के साथ रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न कराये। साथ ही पण्डित संजयजी द्वारा वज्रपुरुषार्थ, जैन रामायण, चैतन्ययात्रा आदि की प्रस्तुति हुई। पूजन-विधान के मध्य प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम भी हुआ। इसके अतिरिक्त अकलंक जैन, मोना जैन, ज्ञान ज्योति, विक्रांत जैन द्वारा महावीर स्वामीजी के पाँचवें नाम पर आधारित नृत्य नाटिका 25 बाल कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की गई।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा संपन्न हुये। स्थानीय विधानाचार्य ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पण्डित शीतलजी पाण्डे, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल का विशेष सहयोग रहा। **– जम्बु जैन धवल**

बाल-युवा संस्कार शिविर संपन्न

हिंगोली (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री महावीर भवन में दिनांक 23 से 29 मई तक तेरहवाँ बाल-युवा-प्रौढ संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर द्वारा तीन लोक के सामान्य स्वरूप विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम व संगीतमय कथा का आयोजन हुआ। शिविर में 250 बच्चों सहित लगभग 500 साधर्मियों ने लाभ लिया।

लन्दन में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

लन्दन (इंग्लैण्ड) : यहाँ श्री महावीर स्वामी जैन टेम्पल में दिनांक 8 से 13 जुलाई तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरान्त समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति हुई। रात्रि में प्रतिदिन तीन लोक के सामान्य स्वरूप को बताते हुये सूर्य चन्द्र आदि ज्योतिष देवों के स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। एक दिन विशेष रूप से टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती हेतु सम्मेदशिखर पधारने का आमंत्रण दिया गया।

जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ रामपुरा स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 12 जून तक युगलजी की स्मृति में 24वाँ जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विकासजी छाबड़ा, इन्दौर द्वारा प्रात: प्रवचनसार एवं सायंकाल जीवसमास पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री झालावाड़, पण्डित चेतनजी शास्त्री झालावाड़ एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा बालकों की कक्षा ली गई। महिलाओं की कक्षा श्रीमती सारिका छाबड़ा ने ली।

दिनांक 5 जून को ध्वजारोहण श्री चौथमलजी लक्ष्मीलालजी बाबरिया ने एवं शिविर-उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी बजाज ने किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रकुमारजी बज, मुख्य अतिथि श्री पवनजी जैन (अति.पुलिस अधीक्षक) एवं विशिष्ट अतिथि श्री बालचंदजी पटवारी व श्री तेजमलजी पटवारी थे। मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी जैन ने युगलजी का स्मरण करते हुये कहा कि इस शिविर प्रारम्भ युगलजी द्वारा 24 वर्ष पूर्व किया गया था। दिनांक 8 व 9 जून को पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा श्रुतस्कंध मण्डल विधान कराया गया। अन्तिम दिन जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। जुलूस के पश्चात् शिविर का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। इसमें अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्रकुमारजी हरसौरा व श्री प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन एवं विशिष्ट अतिथि श्री रूपचंदजी जैन थे।

शिविर में लगभग 300 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। कार्यक्रम में वीरवनिता संघ महिला मण्डल का विशेष सहयोग रहा। निर्देशन एवं संचालन श्री चिन्मयजी जैन एवं पण्डित चैतन्यजी शास्त्री द्वारा किया गया।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्राचार का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

विद्वानों से अनुरोध

प्रवचनार्थ जाने वाले विद्वानों से अनुरोध है कि अपनी स्वीकृति जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें।

सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 11 जून तक ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन की प्रेरणा एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सान्निध्य में 12वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

यह शिविर म.प्र. के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना जिलों में तथा उ.प्र. के इटावा, औरैया, मैनपुरी, आगरा, फिरोजाबाद, झाँसी, ललितपुर आदि जिलों के विभिन्न 73 स्थानों पर एक साथ आयोजित किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर से 73, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 2, श्री आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा से 18, ब्रह्मचारी विद्वानों, स्वाध्यायी विद्वानों, विदुषी बहिन 16, स्नातक विद्वान 17 व स्थानीय स्तर पर 46 – इसप्रकार कुल 172 विद्वानों के सहयोग द्वारा तत्त्वप्रचार हुआ।

शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया जहाँ पर कोई विद्वान नहीं पहुँच पाता है। इस शिविर में सभी वर्गों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया गया तथा शिशु वर्ग बालवर्ग प्रथम व द्वितीय, किशोर वर्ग, प्रौढ वर्ग के नाम से कक्षा के रूप में विभाजित किया गया। शिविर में कक्षा अनुसार सभी जगह कक्षायें चली व सभी शिविर स्थानों पर प्रतिदिन प्रात: सामूहिक पूजन, शिविर कक्षायें, प्रवचन; दोपहर में सामूहिक कक्षा; सायंकाल शिविर कक्षा, भक्ति, प्रौढ कक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रम आयोजित हुये। शिविर में लगभग 8932 बच्चों एवं 2609 साधर्मियों ने – इसप्रकार 11 हजार 500 से अधिक शिविरार्थियों ने लाभ लिया। शिविर का उद्घाटन दिनांक 2 जून को एवं समापन समारोह दिनांक 11 जून को श्री सीमंधर जिनालय देवनगर में संपन्न हुआ।

शिविर के निर्देशक पण्डित अनिलजी शास्त्री, सहनिर्देशक पण्डित आशीषजी शास्त्री, प्रमुख संयोजक पुष्पेन्द्रजी जैन, संयोजक पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित अनुभवजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित नमनजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित वैभवजी शास्त्री गोरमी थे।

– पुष्पेन्द्र जैन

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

39वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त, 2016 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

यंग जैन प्रोफेशनल्स अधिवेशन संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ आर.एन.टी.मार्ग स्थित रवीन्द्र नाट्य गृह में दिनांक 19 जून को यंग जैन प्रोफेशनल्स नामक संस्था के तत्त्वावधान में बृहद् अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित प्रसिद्ध मोटिवेशनल गुरु श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा लगभग 1200 से अधिक युवाओं को बताया गया कि आज की युवा पीढ़ी भौतिकवादी युग के साधनों को सुख-समृद्धि का आधार मान बैठी है, वह सही और गलत का निर्णय ही नहीं कर पाती है। अधिवेशन में उन्हें लौकिक विषय-भोगों से दूर हटाकर अध्यात्म के माध्यम से ही सुख-समृद्धि का जीवन कैसे प्राप्त हो ? इस संबंध में निर्देश एवं मार्गदर्शन दिया गया। सभा को श्री साकेतजी बड़जात्या, श्री अशोकजी बड़जात्या, डॉ. अनुपम जैन, श्री विरागजी शास्त्री आदि विभिन्न विद्वानों एवं प्रबुद्ध वक्ताओं ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के निर्देशक श्री विजयजी बड़जात्या एवं पण्डित सौरभ-गौरवजी शास्त्री इन्दौर थे।

ज्ञातव्य है कि आज से 8 वर्ष पूर्व पण्डित सौरभ-गौरवजी शास्त्री के नेतृत्व व निर्देशन में यंग जैन प्रोफेशनल्स का गठन किया गया, जिसमें युवा वर्ग को नैतिक, सांस्कृतिक व जिनागम से संबंधित शिक्षायें दी जाती है। इस समूह में इन्दौर व देश-विदेश के चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, कम्पनी सेक्रेटरी, डॉक्टर्स, आई.टी. इंजीनियर्स, उद्यमी, व्यवसायी, मैनेजर्स सभी तरह के युवा-युवतियाँ जुड़े हैं। इस संस्था में 8 अन्य देशों के युवा भी प्रत्येक शनिवार व रविवार को इन्टरनेट के माध्यम से जुड़कर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में –

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में सत्र 2016-17 में होने वाली साप्ताहिक गोष्ठियों का उद्घाटन दिनांक 3 जुलाई को किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील (उपप्राचार्य), डॉ.दीपकजी वैद्य, श्रीमती कमला भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित श्रीमंतजी नेज, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित गौरव उखलकर आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री शांतिलालजी अलवर, श्री ताराचंदजी सोगानी भी उपस्थित थे। उद्घाटन के पश्चात् 'हमारा महाविद्यालय' विषय पर गोष्ठी प्रारंभ हुई, जिसमें 7 विद्यार्थियों ने अपना वक्तव्य दिया। मंगलाचरण विजय जैन सिमरिया ने एवं संचालन ऋषभ जैन दिल्ली व स्वप्निल जैन भोपाल (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पंचकल्याणक की वीडियो डीवीडी उपलब्ध

गत वर्ष श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट द्वारा विले पारले मुम्बई में दिनांक 17 से 22 मई 2015 तक हुये पंचकल्याणक का 52 वीडियो डीवीडी का सेट मात्र 1500/- रुपये में और डिजाइनर सेट 3 हजार रुपये में उपलब्ध है। पंचकल्याणक की झलक की 3 घंटे की लघु फिल्म की डीवीडी मात्र 100/- रुपये में उपलब्ध है।

मंगलवाणी भाग 3 तैयार

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विले पारले मुम्बई द्वारा संचालित सबटाइटल प्रवचनों की शृंखला में आचार्य योगीन्दुदेव विरचित योगसार ग्रंथ पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सम्पूर्ण 45 प्रवचनों का वीडियो प्रारूप मंगलवाणी भाग 3 के रूप में तैयार है। इन प्रवचनों में आप स्क्रीन पर फोटो स्लाइड शो देखने के साथ साथ प्रवचनों को हिन्दी में पढ भी सकेंगे। सेट प्राप्त करने हेतु संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारले, मुम्बई फोन-022-26130820 **Email : info@vitragvani.com**

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

(1) मुम्बई : यहाँ विले पारले में निर्मित श्री सीमन्धर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का प्रथम वार्षिक महोत्सव दिनांक 8 से 12 जून तक श्री पंच परमेष्ठी विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल एवं सुनीलजी जैन द्वारा संपन्न हुये।

(2) यहाँ मुम्बई-पूना हाइवे पर स्थित लोनावाला में निर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर के वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की प्रथम वर्षगांठ का कार्यक्रम दिनांक 18 जून को संपन्न हुआ। इस अवसर पर जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में मुम्बई, पूना आदि नगरों के अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

शोक समाचार

(1) विदिशा (म.प्र.) निवासी पण्डित लालजीरामजी का दिनांक 25 जून को इन्दौर में देहावसान हो गया। आप अध्यात्मप्रिय वरिष्ठ प्रतिष्ठाचार्य, जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान, सरल, सहज स्वभावी थे। आपका सोनागिरि में स्थित कुन्दकुन्द नगर की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गतवर्ष पंचकल्याणक में एवं इस वर्ष प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर विदिशा में आपकी सक्रियता व स्नेह उल्लेखनीय रहा।

(2) सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमती श्यामबाईजी जैन धर्मपत्नी श्री कृष्णचन्द्रजी जैन का दिनांक 27 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर की सासूमाँ थीं।

(3) खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती विद्यादेवी जैन धर्मपत्नी स्व. पण्डित पन्नालालजी गजया का दिनांक 9 जुलाई को जबलपुर में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप नंदीश्वर विद्यालय एवं विद्यापीठ की संस्थापिका थीं।

(4) अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री अमोलकचंदजी 'बंधु' का दिनांक 13 जुलाई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अशोकनगर के स्वाध्याय मंदिर एवं मुमुक्षु मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 501-501/- रुपये प्राप्त हुये।

(5) भोपाल (म.प्र.) निवासी श्रीमती धनश्रीबाईजी धर्मपत्नी श्री कपूरचंदजी डैडी का दिनांक 9 जुलाई को वैराग्यपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं एवं भोपाल मुमुक्षु मण्डल की प्रेरणा स्रोत थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 501-501/- रुपये प्राप्त हुये।

(6) सतना (म.प्र.) निवासी श्रीमती शांतिबाई जैन धर्मपत्नी स्व. नीरज जैन का दिनांक 30 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 जुलाई से 9 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**
29 अगस्त से 5 सित.	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
6 से 15 सितम्बर	**औरंगाबाद**	**दशलक्षण पर्व**
9 से 14 अक्टूबर	**सम्मेदशिखरजी**	**स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2016

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 14 अगस्त 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 15 अगस्त 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
मंगलवार 16 अगस्त 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड

इतिहास के झरोखे से...

टोडरमल स्मारक भवन स्थित कार्यालय का निरीक्षण करते हुये डॉ.पन्नालाल साहित्याचार्य आदि विद्वज्जन

टोडरमल स्मारक भवन स्थित महाविद्यालय छात्रावास का निरीक्षण करते हुये पण्डित सत्यंधर सेठी, पण्डित मिलापचंद शास्त्री आदि विद्वज्जन

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

श्री टोडरमल स्मारक भवन में डॉ. भारिल्ल सम्बोधित कर रहे हैं और मंचासीन हैं – श्रीयुत साहू अशोककुमारजी जैन, उद्योगमंत्री श्री त्रिलोकचंद जैन, श्री पूरनचंदजी गोदिका, डॉ. गोपीचंदजी पाटनी, श्री कांतिभाई मोटाणी, श्री हिम्मतलाल जे. शाह, ब्र. माणिकचन्दजी भिसीकर और श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी।

आचार्य श्री विमलसागरजी के संघ की उपस्थिति में डॉ. भारिल्ल प्रवचन कर रहे हैं। पास में बाबूभाई मेहता तथा श्रोताओं में नेमीचंदजी पाटनी व रतनलालजी गंगवाल दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**